

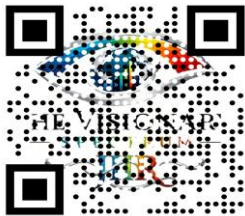
भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन में शिक्षण विधियाँ एवं आधुनिक शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता

सर्वेश कुमार¹, डा० चमन कौर²

¹शोधार्थी, शिक्षा संकाय, डा० राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

²सहायक प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कालेज, गण्डा।

Email: sarveshkumarjalalpur@gmail.com



Received 05 August 2026

Accepted 10 August 2026

Published 19 August 2026

Corresponding Author:

सर्वेश कुमार

Email: sarveshkumarjalalpur@gmail.com

DOI: <https://doi.org/10.64880/tvsjir.v1i3.04>

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sector.

Copyright: © 2026 The Author(s).



This is an open access article under the [Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/).

OPEN ACCESS

सारांश:

भगिनी निवेदिता भारतीय शिक्षा के इतिहास में एक ऐसी शिक्षाविद् एवं समाज सेविका के रूप में प्रतिष्ठित हैं जिन्होंने शिक्षा को केवल पुस्तकीय ज्ञान अथवा परीक्षा-केंद्रित प्रक्रिया न मानकर व्यक्ति एवं राष्ट्र के समग्र विकास का माध्यम माना। उनका वास्तविक नाम मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल था। स्वामी विवेकानंद के संपर्क में आने के पश्चात उन्होंने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया तथा विशेष रूप से बालिकाओं की शिक्षा, राष्ट्रीय चेतना, चरित्र निर्माण, सांस्कृतिक जागरूकता और समाज सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके शैक्षिक विचारों में भारतीय संस्कृति, अनुभवात्मक अधिगम, सक्रिय सहभागिता, मातृभाषा, प्रकृति एवं परिवेश से सीखना, प्रश्नोत्तर, निरीक्षण, अनुकरण, कार्य द्वारा सीखना तथा नैतिक एवं चरित्रपरक शिक्षा को विशेष स्थान प्राप्त था। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल-आधारित शिक्षा, मूल्य शिक्षा, मातृभाषा में शिक्षण, समावेशी शिक्षा, बाल-केंद्रित शिक्षा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा पर विशेष बल दिया जा रहा है। इन संदर्भों में भगिनी निवेदिता की शिक्षण संबंधी अवधारणाएँ अत्यंत प्रासंगिक दिखाई देती हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन में निहित प्रमुख शिक्षण विधियों का विश्लेषण करना तथा आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उनकी उपयोगिता एवं प्रासंगिकता को स्पष्ट करना है।

मुख्य शब्द: भगिनी निवेदिता, शैक्षिक दर्शन, शिक्षण विधियाँ, आधुनिक शिक्षा।

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के विकास की आधारभूत प्रक्रिया है। शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञान प्रदान नहीं करती बल्कि उसके बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं आध्यात्मिक व्यक्तित्व का निर्माण भी करती है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा-व्यवस्था उस राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों को प्रतिबिंबित करती है। भारतीय शिक्षा-परंपरा में शिक्षा को सदैव व्यक्ति के सर्वांगीण विकास तथा समाज एवं राष्ट्र के कल्याण से जोड़ा गया है। उन्नीसवीं एवं बीसवीं शताब्दी के संक्रमणकाल में भारत सामाजिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। इसी समय भगिनी निवेदिता ने भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में

How to Cite this article: कुमार सर्वेश, कौर, डा० चमन. (2026) भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन में शिक्षण विधियाँ एवं आधुनिक शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता.

The Visionary Spectrum: Global Journal of Research and Innovation, Page No. 22-29.

DOI: <https://doi.org/10.64880/tvsjir.v1i3.04>

महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने भारतीय समाज को केवल पश्चिमी शिक्षा-पद्धति के अनुकरण तक सीमित न रखकर ऐसी शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया जो भारतीय जीवन, संस्कृति, इतिहास, परंपरा एवं राष्ट्रीय चेतना से जुड़ी हो। भगिनी निवेदिता के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना अथवा तथ्यों का संकलन नहीं था। शिक्षा व्यक्ति के भीतर निहित शक्तियों को जागृत करने, आत्मविश्वास विकसित करने, चरित्र निर्माण करने और उसे समाज एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाने की प्रक्रिया थी। उनकी शिक्षण पद्धति में बालक को निष्क्रिय श्रोता के रूप में नहीं देखा गया। वे बालक के अनुभव, जिज्ञासा, परिवेश और सक्रिय सहभागिता को सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आधार मानती थीं। यही कारण है कि उनके शैक्षिक विचार वर्तमान बाल-केंद्रित, अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षा से निकटता रखते हैं।

भगिनी निवेदिता का जीवन एवं शैक्षिक कार्य

भगिनी निवेदिता का जन्म 28 अक्टूबर 1867 को आयरलैंड में मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल के रूप में हुआ। वे प्रारंभ से ही शिक्षा एवं सामाजिक सेवा के प्रति संवेदनशील थीं। शिक्षिका के रूप में उन्होंने बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य किया। 1895 में लंदन में स्वामी विवेकानंद से उनकी भेंट हुई। स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने भारत आने का निर्णय लिया। 1898 में वे भारत आईं और स्वामी विवेकानंद ने उन्हें निवेदिता नाम प्रदान किया, जिसका अर्थ है समर्पित। भारत में उन्होंने विशेष रूप से बालिका शिक्षा को अपना प्रमुख कार्यक्षेत्र बनाया। कोलकाता में उन्होंने बालिकाओं के लिए विद्यालय स्थापित किया। उनका उद्देश्य केवल बालिकाओं को पढ़ना-लिखना सिखाना नहीं था बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर, जागरूक, संस्कारित एवं राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी बनाना था। उनके शिक्षा संबंधी विचारों पर भारतीय संस्कृति, स्वामी विवेकानंद के वेदांत दर्शन तथा भारतीय समाज के प्रत्यक्ष अनुभव का गहरा प्रभाव था।

भगिनी निवेदिता का शैक्षिक दर्शन

भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन को निम्नलिखित प्रमुख आधारों में समझा जा सकता है।

- शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास: निवेदिता शिक्षा को केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं मानती थीं। उनके अनुसार शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का - शारीरिक विकास, मानसिक विकास, बौद्धिक विकास, नैतिक विकास, भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास, आध्यात्मिक विकास होना चाहिए। इस दृष्टि से उनका शिक्षा-दर्शन आधुनिक Holistic Education की अवधारणा के निकट दिखाई देता है।
- चरित्र निर्माण: भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचारों में चरित्र निर्माण को अत्यधिक महत्व प्राप्त था। वे मानती थीं कि ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति के व्यवहार और जीवन-मूल्यों में दिखाई दे। शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों में - सत्यनिष्ठा, आत्मानुशासन, साहस, आत्मविश्वास, सेवा भावना, कर्तव्यनिष्ठा, सहयोग, उत्तरदायित्व जैसे गुणों का विकास होना चाहिए।
- राष्ट्रीय चेतना: निवेदिता की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना का विकास था। वे चाहती थीं कि भारतीय विद्यार्थी अपने देश के इतिहास, संस्कृति, परंपरा एवं महान व्यक्तित्वों से परिचित हों। उनके अनुसार ऐसी शिक्षा आवश्यक थी जो विद्यार्थियों में अपने राष्ट्र एवं समाज के प्रति सम्मान तथा उत्तरदायित्व उत्पन्न करे।

भगिनी निवेदिता के शैक्षिक दर्शन में शिक्षण विधियाँ

यह शोध-पत्र का केंद्रीय पक्ष है। भगिनी निवेदिता ने किसी एक औपचारिक शिक्षण विधि को अपने दर्शन का एकमात्र आधार नहीं बनाया बल्कि बालक, विषय और परिस्थिति के अनुसार विभिन्न विधियों के प्रयोग पर बल दिया।

- बाल-केंद्रित शिक्षण विधि: भगिनी निवेदिता की शिक्षा में बालक को केंद्रीय स्थान प्राप्त था। वे बालक की रुचि, क्षमता, अनुभव एवं जिज्ञासा को शिक्षण का आधार मानती थीं। शिक्षक का कार्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं बल्कि बालक को सीखने के लिए प्रेरित करना था। आज बाल-केंद्रित शिक्षा आधुनिक शिक्षण का प्रमुख सिद्धांत है। विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी, रुचि एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को ध्यान में रखना इसी विचार से संबंधित है।

- अनुभवात्मक शिक्षण विधि: निवेदिता का मानना था कि विद्यार्थी केवल सुनकर या पढ़कर ही नहीं सीखता बल्कि प्रत्यक्ष अनुभवों के माध्यम से अधिक प्रभावी ढंग से सीखता है। उदाहरण के लिए इतिहास पढ़ाते समय केवल तिथियों को याद कराने के स्थान पर ऐतिहासिक घटनाओं, व्यक्तियों, स्थानों और सामाजिक परिस्थितियों से विद्यार्थियों को परिचित कराया जा सकता है। आज Experiential Learning, Activity&Based Learning तथा Learning by Doing पर विशेष बल दिया जाता है। इस दृष्टि से निवेदिता की शिक्षण अवधारणा अत्यंत आधुनिक प्रतीत होती है।
- निरीक्षण विधि: निवेदिता बालकों को अपने आसपास के वातावरण को देखने, समझने और उससे सीखने के लिए प्रेरित करती थीं। प्रकृति, समाज, स्थानीय संस्कृति, कला एवं दैनिक जीवन की घटनाएँ विद्यार्थियों के लिए शिक्षण-स्रोत बन सकती हैं। उदाहरण: विज्ञान के शिक्षण में केवल पुस्तक के चित्र दिखाने के बजाय पौधों का प्रत्यक्ष निरीक्षण कराया जा सकता है।
- प्रश्नोत्तर विधि: विद्यार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करना निवेदिता की शिक्षण दृष्टि का महत्वपूर्ण तत्व था। प्रश्न पूछना केवल परीक्षा की तैयारी का साधन नहीं बल्कि चिंतन की प्रक्रिया का हिस्सा होना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों से प्रश्न पूछे तथा विद्यार्थियों को भी प्रश्न पूछने के लिए स्वतंत्र वातावरण प्रदान करें। इससे - तार्किक चिंतन, आलोचनात्मक चिंतन, जिज्ञासा, समस्या समाधान क्षमता का विकास होता है।
- संवाद एवं चर्चा विधि: निवेदिता के शिक्षण में संवाद का महत्वपूर्ण स्थान था। शिक्षक और विद्यार्थी के बीच जीवंत संवाद सीखने को अधिक प्रभावी बना सकता है। आज की "Discussion Method, Collaborative Learning और Peer Learning इसी प्रकार की सहभागितापूर्ण शिक्षा को प्रोत्साहित करती हैं।
- अनुकरण विधि: बालक अपने आसपास के व्यक्तियों के व्यवहार से बहुत कुछ सीखता है इसलिए शिक्षक का व्यक्तित्व स्वयं शिक्षण का माध्यम बन जाता है। निवेदिता के विचारों के संदर्भ में शिक्षक को - आदर्श व्यवहार, अनुशासन, सेवा, सत्यनिष्ठा, राष्ट्रप्रेम, संवेदनशीलता का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। इस प्रकार Teacher as a Role Model की अवधारणा उनके दर्शन से जोड़ी जा सकती है।
- गतिविधि-आधारित शिक्षण: निवेदिता शिक्षा को जीवन से जोड़ने की पक्षधर थीं। अतः ऐसी गतिविधियाँ जिनमें विद्यार्थी स्वयं कार्य करता है, सीखने को अधिक प्रभावी बनाती हैं। जैसे - चित्र निर्माण, हस्तकला, स्थानीय इतिहास का संकलन, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, समूह कार्य, सामाजिक सेवा, परियोजना कार्य। आज की Activity & Based Learning एवं Project & Based Learning में इसी प्रकार की सक्रियता को महत्व दिया जाता है।
- प्रकृति के माध्यम से शिक्षण: निवेदिता के शिक्षा-दर्शन में प्रकृति एवं परिवेश का महत्वपूर्ण स्थान था। प्राकृतिक वातावरण बच्चों के लिए प्रत्यक्ष शिक्षण-संसाधन बन सकता है। उदाहरण के लिए -
 - विज्ञान: पौधे, मिट्टी, जल, मौसम
 - भूगोल: स्थानीय स्थल एवं पर्यावरण
 - गणित: दैनिक जीवन की गणनाएँ
 - सामाजिक विज्ञान: स्थानीय समाज एवं संस्थाएँ
 इस प्रकार शिक्षा को कक्षा की चार दीवारों से बाहर ले जाया जा सकता है।
- मातृभाषा आधारित शिक्षण: निवेदिता भारतीय बालकों की शिक्षा को उनकी भाषा और सांस्कृतिक परिवेश से जोड़ने की पक्षधर थीं। मातृभाषा में शिक्षा बालक की समझ एवं अभिव्यक्ति को अधिक सहज बना सकती है। यह विचार वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। राष्ट्रीय शिक्षा

नीति 2020 में प्रारंभिक स्तर पर मातृभाषास्थानीय भाषा में शिक्षण को विशेष महत्व दिया गया है। इस कारण निवेदिता की भाषा संबंधी शिक्षा-दृष्टि वर्तमान संदर्भ में विशेष प्रासंगिकता रखती है।

भगिनी निवेदिता की शिक्षण विधियों और आधुनिक शिक्षा का संबंध

भगिनी निवेदिता की अवधारणा	आधुनिक शिक्षा में समान अवधारणा
बाल-केंद्रित शिक्षा	Learner-Centred Education
अनुभव द्वारा सीखना	Experiential Learning
कार्य द्वारा सीखना	Learning by Doing
निरीक्षण	Observation-Based Learning
प्रश्न एवं जिज्ञासा	Inquiry-Based Learning
संवाद एवं चर्चा	Collaborative Learning
गतिविधि	Activity-Based Learning
प्रकृति से सीखना	Environmental Education
मातृभाषा	Mother Tongue-Based Education
चरित्र निर्माण	Value Education
राष्ट्रीय चेतना	Citizenship Education
समाज सेवा	Service Learning
आत्मविश्वास	Life Skills Education

इस तुलना से स्पष्ट है कि निवेदिता की शिक्षा संबंधी अनेक अवधारणाएँ आधुनिक शिक्षा के प्रमुख सिद्धांतों के साथ सामंजस्य रखती हैं।

आधुनिक शिक्षा में भगिनी निवेदिता की प्रासंगिकता

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को अधिक समग्र, लचीला, कौशल-आधारित, अनुभवात्मक एवं भारतीय संदर्भ से जुड़ा बनाने पर बल दिया गया है। इस संदर्भ में निवेदिता के निम्न विचार महत्वपूर्ण हैं:- समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, मातृभाषा, मूल्य शिक्षा, भारतीय ज्ञान परंपरा, कौशल विकास, बालिका शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व।
- बालिका शिक्षा: भगिनी निवेदिता का सबसे महत्वपूर्ण योगदान बालिका शिक्षा के क्षेत्र में माना जा सकता है। उन्होंने उस समय बालिकाओं की शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का महत्वपूर्ण साधन माना जब महिलाओं की शिक्षा को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता था। आज महिला शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में उनके विचार अत्यंत उपयोगी हैं।
- मूल्यपरक शिक्षा: वर्तमान शिक्षा में ज्ञान और कौशल के साथ मूल्यों की आवश्यकता बढ़ गई है। प्रतिस्पर्धा, तकनीकी परिवर्तन और सामाजिक परिवर्तन के बीच विद्यार्थियों में नैतिकता, सहानुभूति, सहयोग एवं उत्तरदायित्व का विकास आवश्यक है। निवेदिता का चरित्र निर्माण आधारित शिक्षा-दर्शन इस आवश्यकता की पूर्ति में उपयोगी हो सकता है।

- डिजिटल शिक्षा के संदर्भ में: निवेदिता के समय डिजिटल तकनीक उपलब्ध नहीं थी इसलिए उनके विचारों को सीधे डिजिटल शिक्षा से जोड़ना उचित नहीं होगा परंतु उनके मूल सिद्धांतों को डिजिटल वातावरण में लागू किया जा सकता है।

भगिनी निवेदिता की शिक्षण पद्धति का शिक्षक की भूमिका पर प्रभाव

निवेदिता की दृष्टि में शिक्षक केवल सूचना देने वाला व्यक्ति नहीं है। शिक्षक - मार्गदर्शक, प्रेरक, आदर्श, सहयोगी, संस्कारदाता, सामाजिक चेतना का वाहक होना चाहिए। आधुनिक शिक्षा में भी शिक्षक की भूमिका Teacher as Facilitator के रूप में विकसित हो रही है। अतः निवेदिता की शिक्षक संबंधी अवधारणा आधुनिक शिक्षण व्यवस्था के लिए उपयोगी है।

भगिनी निवेदिता की शिक्षा-दृष्टि की प्रमुख विशेषताएँ

उनके शैक्षिक दर्शन की प्रमुख विशेषताओं को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है -

- जीवनोपयोगी शिक्षा: शिक्षा का संबंध वास्तविक जीवन से होना चाहिए।
- बाल-केंद्रितता: विद्यार्थी शिक्षा प्रक्रिया का सक्रिय केंद्र हो।
- अनुभव पर बल: प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से सीखना।
- चरित्र निर्माण: ज्ञान के साथ नैतिक विकास।
- राष्ट्रीय चेतना: राष्ट्र एवं समाज के प्रति उत्तरदायित्व।
- भारतीय संस्कृति: शिक्षा में भारतीय सांस्कृतिक संदर्भों का समावेश।
- महिला शिक्षा: बालिकाओं की शिक्षा एवं सशक्तिकरण।
- सामाजिक सेवा: शिक्षा को समाज सेवा से जोड़ना।
- प्रकृति से संबंध: पर्यावरण एवं परिवेश को शिक्षण का साधन बनाना।
- सक्रिय शिक्षण: विद्यार्थियों की सहभागिता को महत्व देना।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था के लिए उपयोगिता

भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचार वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को निम्न प्रकार से दिशा प्रदान कर सकते हैं -

- शिक्षा को केवल परीक्षा एवं अंक प्राप्ति तक सीमित न करके जीवन-कौशल और व्यक्तित्व विकास से जोड़ा जाए।
- शिक्षण में स्थानीय संस्कृति, इतिहास, कला एवं पर्यावरण को शामिल किया जाए।
- विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने और अपनी बात रखने की स्वतंत्रता दी जाए।
- परियोजना, गतिविधि एवं अनुभवात्मक शिक्षण को बढ़ावा दिया जाए।
- विद्यालयों में मूल्य एवं चरित्र निर्माण को पाठ्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बनाया जाए।
- बालिकाओं को समान शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाएँ।
- डिजिटल तकनीक का प्रयोग विद्यार्थी की सक्रियता बढ़ाने के लिए किया जाए, न कि केवल सूचना प्रसारण के लिए।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

इस अध्ययन के विश्लेषण से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं -

- भगिनी निवेदिता का शिक्षा-दर्शन समग्र व्यक्तित्व विकास पर आधारित था।
- उन्होंने शिक्षा को जीवन एवं समाज से जोड़ने पर बल दिया।
- उनकी शिक्षण दृष्टि में बालक की सक्रिय भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- अनुभव, निरीक्षण, प्रश्नोत्तर एवं गतिविधि उनके शिक्षण दृष्टिकोण के महत्वपूर्ण तत्व माने जा सकते हैं।
- उन्होंने शिक्षा में भारतीय संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना को महत्व दिया।
- बालिका शिक्षा उनके शैक्षिक एवं सामाजिक कार्यों का महत्वपूर्ण पक्ष था।
- चरित्र निर्माण एवं मूल्य शिक्षा उनके दर्शन का केंद्रीय तत्व था।
- उनकी शिक्षण संबंधी अवधारणाएँ आधुनिक अनुभवात्मक एवं गतिविधि-आधारित शिक्षा से सामंजस्य रखती हैं।
- मातृभाषा एवं स्थानीय परिवेश आधारित शिक्षा के संदर्भ में उनके विचार वर्तमान समय में उपयोगी हैं।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के समग्र, अनुभवात्मक, मूल्यपरक एवं भारतीय ज्ञान परंपरा संबंधी दृष्टिकोण से उनके विचारों की प्रासंगिकता और अधिक स्पष्ट होती है।
- डिजिटल युग में उनके विचारों को तकनीक के माध्यम से नए रूप में लागू किया जा सकता है।
- आधुनिक शिक्षा में शिक्षक को केवल ज्ञानदाता के बजाय मार्गदर्शक एवं प्रेरक की भूमिका निभानी चाहिए यह दृष्टिकोण निवेदिता के विचारों से सामंजस्य रखता है।

शैक्षिक निहितार्थ

भगिनी निवेदिता के शिक्षा-दर्शन से आधुनिक शिक्षकों एवं शिक्षा-व्यवस्था के लिए निम्न शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त होते हैं

शिक्षकों के लिए

- गतिविधि आधारित शिक्षण अपनाना।
- विद्यार्थियों की जिज्ञासा को प्रोत्साहित करना।
- स्थानीय उदाहरणों का प्रयोग करना।
- स्वयं आदर्श आचरण प्रस्तुत करना।
- मूल्य एवं चरित्र निर्माण पर ध्यान देना।

विद्यार्थियों के लिए

- स्व-अधिगम को प्रोत्साहित करना।
- प्रश्न पूछने की आदत विकसित करना।
- परियोजना एवं समूह कार्य में भाग लेना।

- सामाजिक सेवा एवं सामुदायिक गतिविधियों में सहभागिता करना।

विद्यालयों के लिए

- भारतीय संस्कृति आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना।
- बालिका शिक्षा के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।
- स्थानीय संसाधनों को शिक्षण-संसाधन के रूप में प्रयोग करना।
- अनुभवात्मक एवं गतिविधि आधारित शिक्षण को बढ़ावा देना।

सुझाव

- शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भारतीय शिक्षाविदों के शैक्षिक विचारों को शामिल किया जाना चाहिए।
- भगिनी निवेदिता के शिक्षा-दर्शन पर आधारित गतिविधियों को विद्यालयी पाठ्यक्रम से जोड़ा जा सकता है।
- बालिका शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण से संबंधित उनके विचारों को आधुनिक संदर्भ में विकसित किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों में स्थानीय इतिहास एवं संस्कृति आधारित परियोजनाएँ कराई जानी चाहिए।
- विद्यार्थियों को सामुदायिक सेवा से जोड़ा जाना चाहिए।
- डिजिटल माध्यमों का प्रयोग अनुभवात्मक एवं सहयोगात्मक अधिगम के लिए किया जाना चाहिए।
- मूल्य एवं चरित्र शिक्षा को केवल सैद्धांतिक विषय न बनाकर व्यवहारिक गतिविधियों से जोड़ा जाना चाहिए।
- मातृभाषा एवं स्थानीय भाषाओं को शिक्षण में उचित स्थान दिया जाना चाहिए।
- शिक्षकों को Facilitator की भूमिका निभाने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के बीच संतुलित समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए।

उपसंहार

भगिनी निवेदिता का शैक्षिक दर्शन भारतीय शिक्षा के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। उनका शिक्षा-दर्शन व्यक्ति के बौद्धिक विकास के साथ-साथ उसके चरित्र, आत्मविश्वास, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पहचान के विकास पर बल देता है। उनकी शिक्षण दृष्टि में बाल-केंद्रितता, अनुभव, निरीक्षण, प्रश्न, संवाद, गतिविधि, प्रकृति, मातृभाषा तथा सामाजिक जीवन को विशेष महत्व दिया गया। यही कारण है कि उनके शिक्षा संबंधी विचार आज की आधुनिक शिक्षा में भी उपयोगी दिखाई देते हैं। वर्तमान समय में जब शिक्षा व्यवस्था परीक्षा-केंद्रितता, तकनीकी निर्भरता, मूल्य-संकट तथा सामाजिक दूरी जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है, तब भगिनी निवेदिता की शिक्षा-दृष्टि शिक्षा को पुनः "मानवीय, मूल्यपरक, अनुभवात्मक, राष्ट्रोन्मुख एवं जीवनोपयोगी" बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान कर सकती है। विशेष रूप से NEP 2020 के समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, मातृभाषा, भारतीय ज्ञान परंपरा, कौशल विकास एवं मूल्यपरक शिक्षा" जैसे पक्षों के संदर्भ में भगिनी निवेदिता के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता स्पष्ट दिखाई देती है। अतः यह कहा जा सकता है कि भगिनी निवेदिता की शिक्षण विधियाँ केवल ऐतिहासिक महत्व की अवधारणाएँ नहीं हैं, बल्कि उनमें आधुनिक शिक्षा की अनेक समस्याओं के समाधान के लिए उपयोगी शैक्षिक तत्व विद्यमान हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उनके मूल सिद्धांतों को वर्तमान सामाजिक, तकनीकी एवं शैक्षिक परिस्थितियों के अनुरूप पुनर्व्याख्यायित करके व्यवहार में लाया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- Nivedita, S. (1910). *The Master as I Saw Him*. Longmans, Green and Co.
- Nivedita, S. (1904). *The Web of Indian Life*. W. Heinemann.
- Nivedita, S. (1905). *Kali the Mother*. Swan Sonnenschein.
- Nivedita, S. (1913). *Cradle Tales of Hinduism*. Longmans, Green and Co.
- Nivedita, S. (1913). *Studies from an Eastern Home*. Longmans, Green and Co.
- Vivekananda, S. (1897). *The Complete Works of Swami Vivekananda*. Advaita Ashrama.
- Government of India. (2020). *National Education Policy 2020*. Ministry of Education.
- Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020: Transforming India's Education System*. Government of India.
- Mukherjee, S. N. (1966). *History of Education in India*. Acharya Book Depot.
- Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India*. Nand Kishore & Bros.

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, and opinions expressed in this publication are solely those of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any errors, claims, or consequences arising from the use of the published content.